ॐ

विश्व हिन्दू परिषद

केन्द्रीय प्रबन्ध समिति बैठक - १४-१५ जुलाई, २०१०

कारसेवकपुरम, जानकीघाट, परिक्रमा मार्ग, अयोध्या (फैजाबाद) उ०प्र०

प्रस्ताव क्रमांक : २

विषय : बारूद के ढेर पर कश्मीर

आज कश्मीरघाटी की स्थिति अत्यन्त भयावह हो चुकी है। ऐसा लगता है १९८० का दशक, जब कश्मीर में अलगाववादी हिंसक आन्दोलन चरम पर था, अब घाटी में दोहराया जा रहा है। हिन्दू विरोधी व भारत विरोधी भावनाएं बहुत तेजी से भड़काई जा रही हैं। पिछले एक माह में ४०० से अधिक हिंसक प्रदर्शन हो चुके हैं जिनमें ''पाकिस्तान जिन्दाबाद'', ''भारत को कुचल डालो'', ''हिन्दुस्तानी कुत्तों वापस जाओ'' के नारे लगाती हिंसक भीड़ न केवल भारत का राष्ट्रीय ध्वज जलाती है अपितु अर्द्धसैनिक बलों पर निर्मम ढंग से पत्थरबाजी करती है तथा अन्य हथियारों से हमला करती है। इन हमलों के कारण लगभग ३००० सिपाही बुरी तरह घायल हो चुके हैं और अगर ये अर्द्धसैनिक बल बचाव की कार्यवाही करते हैं तो इन पर हिंसा के प्रयोग का आरोप लगाकर इन्हें व भारत सरकार को बदनाम करने की कोशिश की जाती है। वहाँ बचे-खुचे मन्दिरों को तोड़ा जा रहा है तथा अमरनाथ यात्रियों पर हमला कर कश्मीर को शेष भारत से जोड़ने वाली एकमात्र यात्रा को बंद करने का षड्यंत्र किया जा रहा है। वहाँ की परिस्थिति पर नियंत्रण करने की क्षमता रखने वाली एकमात्र संस्था भारतीय सेना को 'हिंसा व दुराचार' की झूठी घटनाओं का प्रचार कर उन्हें बदनाम किया जा रहा है व उनको कश्मीर से वापस भेजने की परिस्थिति निर्माण करने का षड्यंत्र किया जा रहा है जिससे अलगाववादी अपनी मनमानी कर सके। इस परिस्थिति का लाभ लेकर २१० पाकिस्तानी आतंकवादी गत एक माह में भारत में घुसपैठ कर चुके हैं। 'पत्थरबाजी' का नया हथियार घाटी की जनता जमकर प्रयोग कर रही है जिसका तोड़ अर्द्धसैनिक बल नहीं निकाल पा रहे हैं। इन षड्यंत्रों के सूत्रधार पाकिस्तान में तो है ही, क्योंकि पाकिस्तानियों की घाटी के कुछ लोगों से दूरभाष पर वार्ताओं से यह स्पष्ट हो चुका है। परन्तु घाटी में स्थित अलगाववादी तत्व तथा पी.डी.पी. और नेशनल कांफ्रेंस जैसे राजनीतिक संगठन इनको भड़का रहे हैं। कांग्रेस की उदासीनता स्थिति को और भयंकर बना रही है।

पिछले कुछ वर्षों का घटनाक्रम यह सिद्ध करता है कि एक सुनियोजित षड्यंत्र के अन्तर्गत अलगाववाद की इस मानसिकता को निरन्तर तीव्रतर बनाने की कोशिश की जा रही है। सन् २००८ में अमरनाथ यात्रा के लिए अस्थायी तौर पर न्यायालय के आदेश के अन्तर्गत जमीन देने का बहाना हो या सन् २००९ में शोपियां में दो युवतियों के साथ कथित दुराचार के झूठे आरोप, घाटी में भारत विरोधी व सेना विरोधी उन्मादी हिंसक प्रदर्शन करने के बहाने लगातार गढ़े जा रहे हैं। इससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह दृश्य निर्माण करने का प्रयास किया जा रहा है कि घाटी के मुसलमानों पर शेष भारत व भारतीय सेना अत्याचार कर रहे हैं।

विश्व हिन्दू परिषद का यह स्पष्ट अभिमत है कि घाटी में अलगाववादी तत्वों को वार्ता या आर्थिक सहायता के आधार पर देशभक्त नहीं बनाया जा सकता। इसीलिए एक प्रमुख आतंकवादी नेता सलाहुद्दीन ने कहा था कि देशभक्ति को खरीदा नहीं जा सकता। ऐसा लगता है कि हर आर्थिक पैकेज के द्वारा उनकी गद्दारी को पुरस्कृत किया जा रहा है।

विश्व हिन्दू परिषद की केन्द्रीय प्रबन्ध समिति केन्द्र सरकार से मांग करती है कि वह कश्मीर के सम्बन्ध में ढुलमुल नीति छोड़े व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दुष्प्रचार की चिन्ता किए बिना अलगाववादी तत्वों को सख्ती से कुचलने की नीति पर अमल करे। वहाँ के आतंकवादी नेता पाकिस्तान के पिट्ठू हैं इसलिए उनको वार्ता के लिए निमंत्रित कर उन्हें महिमामंडित करने की गलती केन्द्र सरकार को नहीं करनी चाहिए। वहाँ के कुछ दलों की स्वायत्तता की मांग 'स्वतंत्रता' की मांग के सिवा कुछ और नहीं है। स्वायत्तता के छलावे में पड़े बिना कश्मीर को सेना के हवाले करना चाहिए। यह सिद्ध हो चुका है कि कश्मीर की वर्तमान परिस्थिति के लिए धारा ३७० जिम्मेदार है, जो अलगाववाद का बीज है। इसलिए विश्व हिन्दू परिषद यह मांग करती है कि धारा ३७० समाप्त की जाए अन्यथा गुलाम कश्मीर को वापस लेने की बात तो दूर शेष कश्मीर से भी हाथ धोने की स्थिति निर्माण हो सकती है। कश्मीर भारत का मुकुट है। इस देश की जनता कश्मीर को भारत से अलग नहीं होने देगी। अमरनाथ यात्रा प्रकरण से सरकार को ध्यान में आ गया होगा कि अगर देश की जनता खड़ी हो गयी तो सरकार के देश की भावना के सामने झुकना ही पड़ेगा।

दिनांक– १४ जुलाई, २०१०

प्रस्तावक : डॉ० सुरेन्द्र जैन
अनुमोदक : श्री खेमचन्द जी